राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
छ.ग., शंकर नगर, रायपुर

मातृभाषा और बहुभाषिता

मातृभाषा का आशय उस भाषा से हैं, जो बच्चों के घर, परिवार, समुदाय द्वारा अपने दैनिक क्रियाकलापों के लिए उपयोग की जाती हैं। इसे प्रथम भाषा भी कहा जाता हैं। बच्चे जन्म से ही इस भाषा को समझते एवं व्यवहार में उपयोग करते है।

जब अध्यापक बच्चों को एक से अधिक भाषाओं का उपयोग करने का सहज व भय रहित अवसर उपलब्ध कराते है। उसे बहुभाषी शिक्षण कहते है।

मातृभाषा में शिक्षा के उद्देश्य

हम मातृभाषा में शिक्षा क्यों देना चाहते हैं?

- विभिन्न दस्तावेज जैसे –पाठ्यचर्या, लर्निंग आउटकम्स, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में कहा गया इसलिए।
- उनकी आर्थिक उन्नति के लिए।
- प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा की मदद से विद्यालय भाषा में समझ बनाने हेतु।

हमारा उद्देश्य मातृभाषा की मदद से विद्यालय भाषा में समझ बनाना है तो हमारी नीतियाँ अलग प्रकार की होगी।

मातृभाषा का महत्व–

एन.सी.एफ.2005 के अनुसार बच्चों को ज्ञात से अज्ञात, परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ना चाहिए। किन्तु हमारी कक्षाओं में प्राथमिक स्तर पर सीखने –सिखाने की प्रक्रिया को अज्ञात (विद्यालय की भाषा) से शुरू होती है। जिससे बच्चे सीख नहीं पाते। यदि कक्षा में उस भाषा को जगह मिले जो बच्चों को आती हैं तो घर की भाषा से स्कूल की भाषा में लाना मुश्किल नहीं होगा। इससे कक्षा भी बाल केन्द्रित बन जाएगी ।

मातृभाषा का महत्व–

पाठ्यचर्या 2005 तथा लर्निंग आउटकम्स में बच्चों के अनुभवों को कक्षा अधिगम प्रक्रिया में शामिल करने की बात कही गई हैं किन्तु यदि बच्चे कक्षा में इस्तेमाल हो रही भाषा को समझते ही न हो या आंशिक रूप से समझ पाते है तो किस तरह बच्चे अपने अनुभव को बता पाएंगे?

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की भाषा का समावेश करने से उनके पहचान, संस्कृति, उनकी भाषा को सम्मान मिलता है। इससे उनके आत्म विश्वास में वृद्धि होती है और स्कूल परिवार व समुदाय के और अधिक निकट आते है।

हमारे स्कूलों में घरेलू और स्कूली भाषा की मौजूदा स्थिति

स्कूल में इस्तेमाल होने वाली मानक भाषा से भिन्न अन्य भाषाओं को कम तर माना जाता है।	स्कूल के दाखिले के समय बच्चे की मौखिक भाषा मातृभाषा में पूरी तरह विकसित हो जाती है	पाठ्यक्रम एवं शिक्षण पद्धतियाँ में भाषाई विविधिता पर ध्यान नहीं दिया जाता है।	मुख्य रूप से डीकोडिग पर ही जोर दिया जाता है।	बच्चे को नए सिरे से पढ़ाना है क्योंकि बच्चे को कुछ नहीं आता	वक्षा में बच्चों का भाषायी विकास सिर्फ किताबों तक ही सीमित है।

छ.ग.राज्य में भाषायी परिदृश्य

- छ.ग राज्य कें 146 विकासखंड में से 86 विकासखंडों को आदिवासी विकासखंड का दर्जा प्राप्त है। यहां कूल 42 आदिवासी जनजातियां है जिनमें हल्बा, गोड़ माड़िया, मुरिया, भतरा, दोरली ,उराव, सांवरा, कमार, बिरहोर आदि प्रमुख्य हैं, इसके अतिरिक्त राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों में उड़िया तेलगू और बंगाली भाषा के लोग निवासरत है। छ.ग शासन इन क्षेत्रों के बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने के लिए विगत कुछ वर्षो से प्रयासरत है।
- छ.ग में अभी तक सिर्फ मोनो लिंग्वल में ही कार्य हुआ है अर्थात जहां एक ही भाषा के अधिंकाश बच्चे अध्ययनरत् है उन्हीं क्षेत्रों के लिए सामग्री का निर्माण कर कार्य किया गया हैं

भाषायी परिस्थितियाँ

- सुदूर ग्रामीण अंचलों/वनांचलों के प्राथमिक शालाओं के बच्चे एकभाषी होते हैं उन्हें अन्य भाषा का ज्ञान नहीं होता हैं।
- आंशिक रूप से विकसित शहरी /विकासखण्ड के निकट स्थित क्षेत्र के बच्चे एक या एक से अधिक भाषा बोलने वाले होते है। अर्थात् वे अपनी मातृभाषा के साथ–साथ विद्यालय की भाषा को भी आंशिक रूप से जानते समझते है।
- शहरी क्षेत्रों के बच्चे विद्यालय की भाषा को अच्छी तरह से समझ लेते हैं।

कक्षा में अध्यापन की स्थिति

- कुछ विद्यालयों में मातृभाषा (L1) बोलने की मनाई होती है। शिक्षक हिन्दी का ही उपयोग करते है।
- कुछ विद्यालयों में(L2) हिन्दी में ही अध्यापन होता है किन्तु कठिन अवधारणाओं को समझाने में L1 की मदद ली जाती है।

मातृभाषा में किए गए कार्य

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने का कार्य आदिवासी बहुल क्षेत्रों में सत्र 2007 से प्रारंभ किया गया। यह कार्यक्रम मिशन संचालक, राज्य परियोजना कार्यालय, राजीव गांधी शिक्षा मिशन, रायपुर एवं एस.सी.ई.आ.टी के संयुक्त प्रयासों से प्रारंभ किया गया। इस कार्यशाला में राज्य के 10 जिलों की 9 बोलियों को पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में चुना गया तथा प्रत्येक जिले की 10–10 शालाओं का चुनाव किया गया। इस संबंध में शिक्षकों को प्रशिक्षण देने एवं सामग्री निर्माण हेतु कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। यह कार्यशाला डॉ पामेला मैकेजीं के मार्गदर्शन में हुई इस कार्यशाला में शिक्षकों द्वारा स्थानीय परिवेश की कविता, कहानी लोकोक्तियां, मुहावरों आदि का संकलन किया गया तथा हस्त निर्मित पुस्तक का भी निर्माण किया गया।

सत्र 2008 में बहुभाषा शिक्षा हेतु 7 भाषाओं में सामग्री का निर्माण किया गया –

1. बिगबुक एवं स्माल बुक
2. शिक्षक संदर्शिका
3. वर्णमाला चार्ट

- बिगबुक एवं स्माल बुक में 10–10 कहानियाँ है जो निम्न थीम पर आधारित है–

कहानी चयन का आधार

- पशु पक्षी से संबंधित कहानियॉ जिनसे बच्चे अच्छे से परिचित है जैसे – कौआ और भैंस, शेर और चूहा, हाथी का घंमड।
- आधुनिक उपरण की जानकारी देने हेतु कहानी –दादी मॉ ने मोबाइल करना सीखा।
- चॉद का कुरता ,सूर्य की छुटटी कक्षा 6 अंग्रेजी की कहानी सरल एवं संक्षेप में उनकी भाषा में दी गई है जब बच्चे इन कक्षाओं में इस कहानी को पढ़े तो उनकी समझ बने।
- लड़की के जन्म संबंधी भ्रांतियाँ पर आधारित कहानी – फूली एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसके घर में सभी को लड़के का इंतजार है।
- गणित की अवधारणा पर आधारित कहानी– शून्य का मान।

बिग बुक बनाने का उद्देश्य

- प्रिंट की अवधारणा से परिचित करना – हमारे शालाओं में आने वाले बच्चे फर्स्ट लर्नर होते हैं जिनके यहां पढ़ने, लिखने की सामग्री नहीं होती । अतः कहानी एवं चित्र के माध्यम से बच्चों को यह बताना कि जो बोला जाता है उसे लिखा भी जाता है तथा जो लिखा जाता है उसे पढ़ा भी जाता है।
- पढ़ने के नियम जानने हेतु --पढ़ना हमेशा बाँए से दाँए होता है।
- कहानी के माध्यम से बच्चों को चर्चा करने के अवसर उपलब्ध कराना जिससे मौखिक भाषा का विकास हो, नई नई शब्दावलियों को सीख सके।

कक्षा में बिग बुक का उपयोग कैसे करे?

- **प्रथम चरण –**

1. किताब में दिए गए शीर्षक एवं चित्र पर बच्चों से चर्चा करना।

- पूर्व ज्ञान को सक्रिय करना – बच्चों के अनुभव को उनको किताब के साथ जोड़ना। किताब में दिए गए पात्रों पर चर्चा करना।
- नई शब्दावली पर चर्चा करना– कहानी में दिए गए नए शब्दों पर चर्चा करना।
- कहानी की विषयवस्तु पर अनुमान लगाना – कहानी में क्या होगा यह कहानी किसके बारे में होगी आदि।
- सुनने का उद्देश्य तय करना – बीच बीच में प्रश्न पूछना जिससे बच्चों में कहानी को ध्यानपूर्वक सुनने की दिलचस्पी पैदा हो।

- **दूसरा चरण –**

  कहानी पढ़ने के दौरान शिक्षक बीच –बीच में प्रश्न पूछते हैं, यह प्रश्न ऐसे हो जिसमें बच्चों को सोचना पडे। आगामी घटनाओं का अनुमान लगाना और पुष्टि करना या गलत साबित होना आदि।

  कहानी को दूसरी बार पढ़ना। इसमें अध्यापक पूरी कहानी को बिना रूके प्रवाहपूर्वक पढ़ सकते हैं।

- **तीसरा चरण–**

  कहानी पर चर्चा करना उसके पात्रों और घटना क्रम पर चर्चा करना। समूह में या व्यकिगत रूपसे अपने शब्दों में सुनाना। कहानी से संबंधित चित्रकारी करवाना आदि

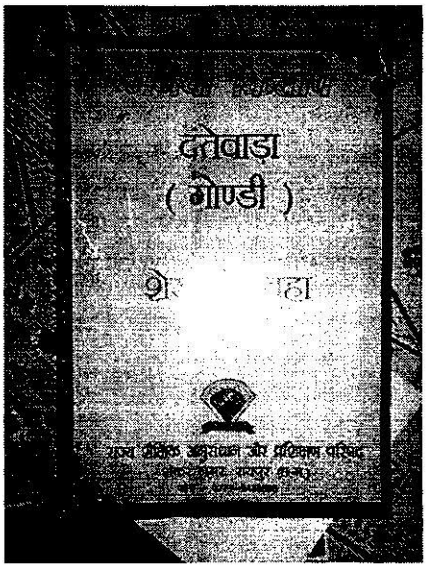

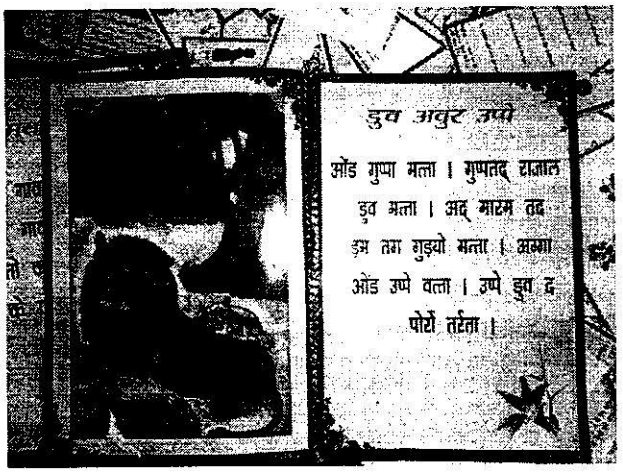

डुव अवुर उप्पे
ओंड गुप्पा मत्ता । गुप्पतद् राजाल
डुव मत्ता । अद् मारम तद
इम तम गुड्यो मत्ता । अम्मा
ओंड उप्पे वत्ता । उप्पे डुवा द
पोर्रो तर्रता ।

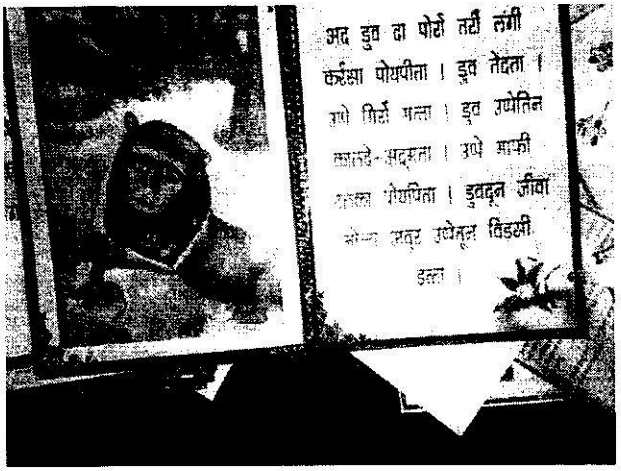

अद डुव दा पोर्रो तर्री लंगी
करंसा पोयपीता । डुव तेढता ।
उप्पे गिर्रो मत्ता । डुव उप्पेतिन
अदृश्ता । उप्पे माफी
पोयपिता । डुवदून जीवा
उप्पेनून विड्सी
इत्ता ।

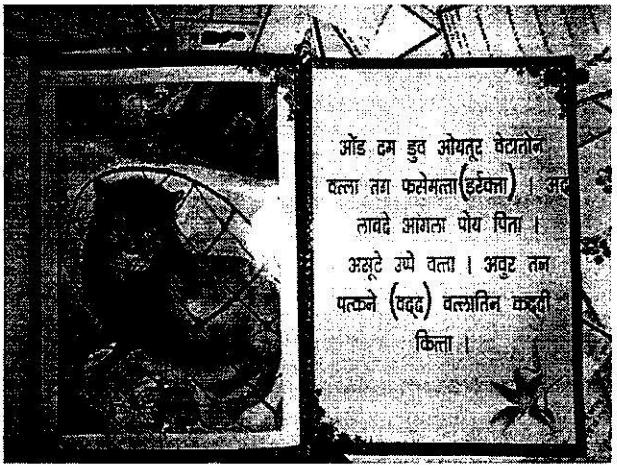

ओंड दम डुव ओयतूद वेटातोन
वत्ता तग फसेमत्ता(इर्रक्ता) । अद
लावदे आगला पोय पिता ।
असूटे उप्पे वत्ता । अवुर तन
पत्कने (वद्द) वत्सतिन कड़ी
कित्ता ।

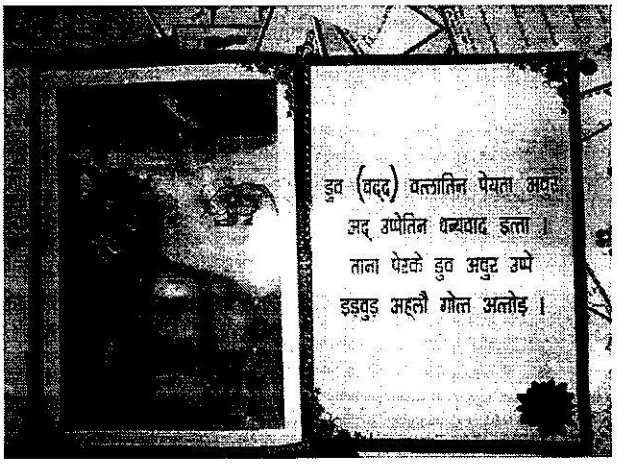

डुव (वद्द) वत्तातिन पेयता अवुर
अद् उप्पेतिन धन्यवाद इत्ता ।
ताना पेरके डुव अदुर उप्पे
इड़वुड़ अह्लौ गोत्त अत्तोड़ ।

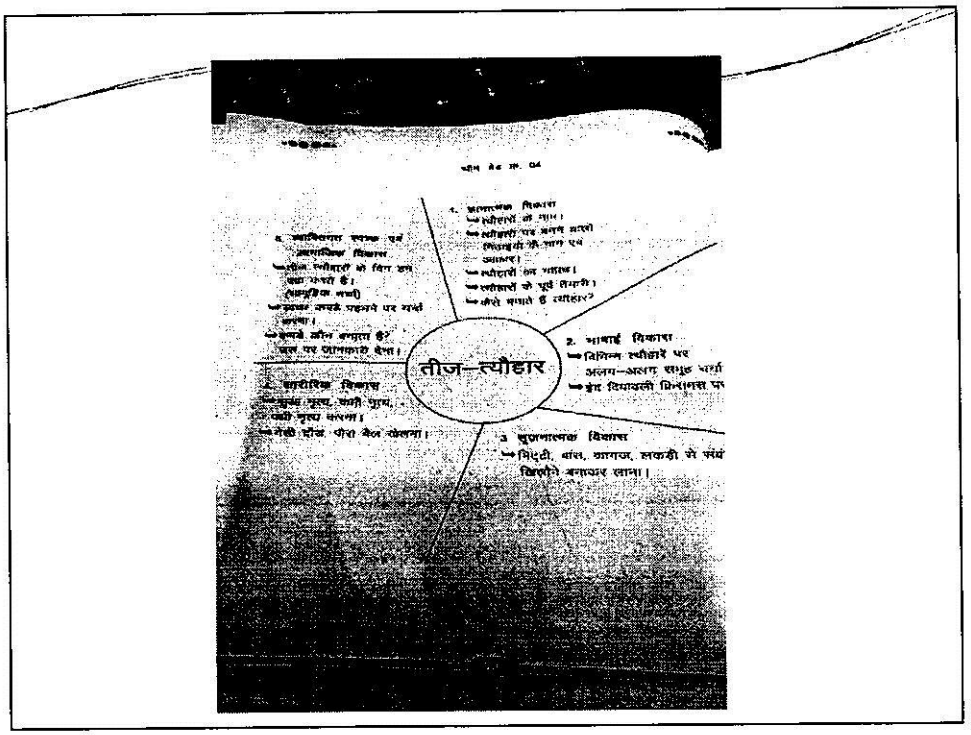
तीज–त्यौहार

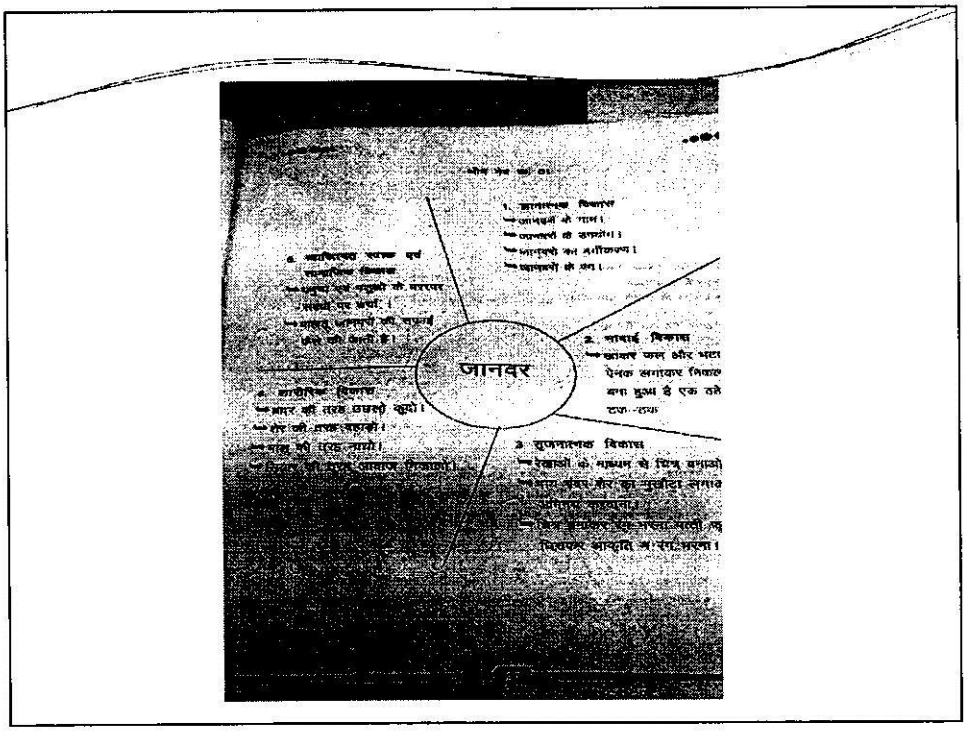
जानवर

कामिक्स पर कार्य—

कॉमिक्स की आवश्यकता –

- कॉमिक्स अभिव्यक्ति का सरल माध्यम है। यह एक ऐसी विधा है जिसे आसानी से हर व्यक्ति/बच्चा
- आसानी से बना सकता है। राज्य में कक्षा अध्यापन हेतु अनेक सामग्रियां तैयार है जैसे एम.जी.एम.एल. कार्ड, क्रमिक अध्ययन माला, चित्र, चार्ट आदि किन्तु ये सभी हिन्दी में होने के कारण इन क्षेत्रों के बच्चों के लिए उपयोगी नहीं हो पा रही हैं। इन सामग्रियों का बच्चों की भाषा में अनुवाद करना अत्यधिक खर्चीला होता हैं। इस समस्या के समाधान हेतु इन अंचलों के शिक्षकों को कॉमिक्स में प्रशिक्षण दिया गया जिससे वे कक्षा में आवश्यकतानुसार सामग्री तैयार कर कक्षा अध्यापन का कार्य कर सकें।

कामिक्स बनाने के उद्देश्य

- दूरस्थ अंचलों में स्थित शिक्षकों को प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमतावान बनाना ताकि वे स्वयं स्थानीय भाषा में पाठ्यक्रम के अनुकूल सामग्री तैयार कर बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दे सकें।
- कॉमिक्स के माध्यम से निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों के भाषायी कौशलों का विकास करना ।

मयला मुण्ड बान्धा

लाठी पिपा

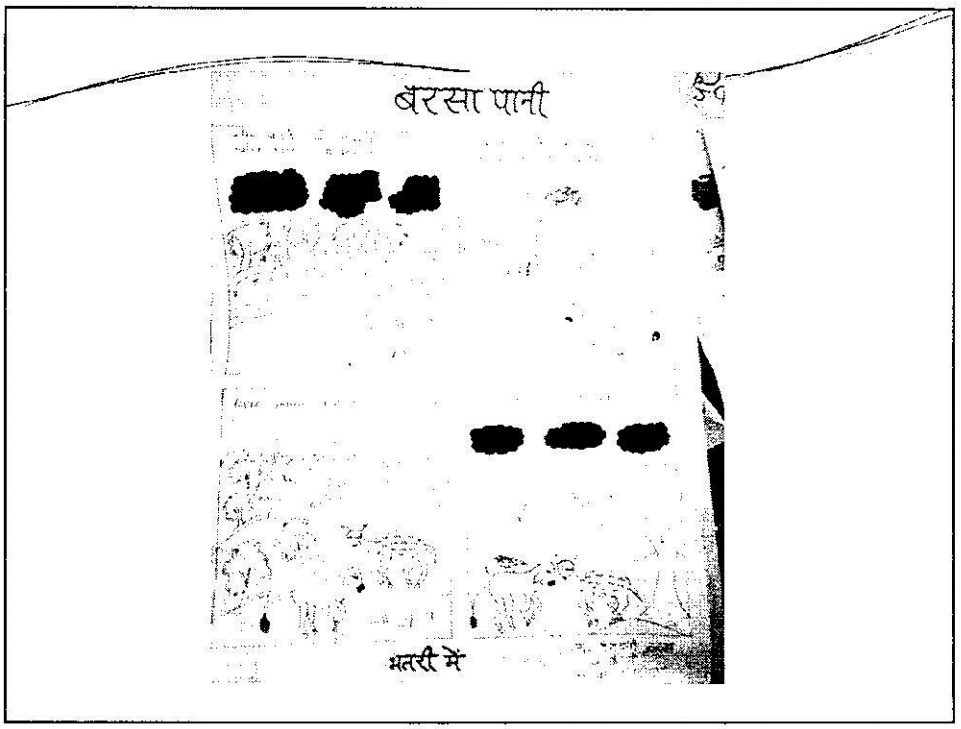

चुनौतियाँ

- भाषायी सर्वे न होने के कारण इस बात का पता नहीं चल पाता कि किस क्षेत्र में कौन सी भाषा बोली जाती है। एक ही विकासखंड के एक ही गांव में भी अलग –अलग भाषा बोली जाती है।
- एक ही भाषा बोलने वालों की संख्या बहुत कम है ऐसी स्थिति में सामग्री बनाकर मुद्रण करना कठिन होता है।
- कुछ भाषाओं में पढ़े– लिखे व्यक्तियों का अभाव है जिससे सामग्री नहीं बन पाती है जैसे –बिरहोर, कमारी बैगानी आदि

चुनौतियाँ

- प्राथमिक शाला पढ़ाने वाले शिक्षकों को स्थानीय भाषा का ज्ञान नहीं है।
- बहुभाषा शिक्षा की स्पष्ट नीति एवं पाठ्यक्रम न होने के कारण शिक्षक पाठ्यपुस्तक को ही आधार मानते हैं।

सुझाव

- भाषाई सर्वे कराया जाए।
- स्थानीय परिवेश में प्रचलित कहानी, कविता, गीत का संकलन किया जाए। जिसका उपयोग शिक्षक अपनी आवश्यकतानुसार कर सकें।
- एक स्पष्ट बहुभाषा नीति बनाई जाए जिसमें सभी प्रशासनिक एवं अकादमिक सदस्यों की भागीदारी हो तथा इसका पर्याप्त प्रचार प्रसार किया जाए।
- पालकों को भी इस बात से अवगत कराना होगा कि हम उनकी भाषा में अध्यापन क्यों कराना चाहते हैं?
- आदिवासी क्षेत्रों में स्थित डाइट के सदस्य एवं डी.एड के प्रशिक्षणार्थियों के सहयोग से इस कार्य को आगे बड़ाया जाए।

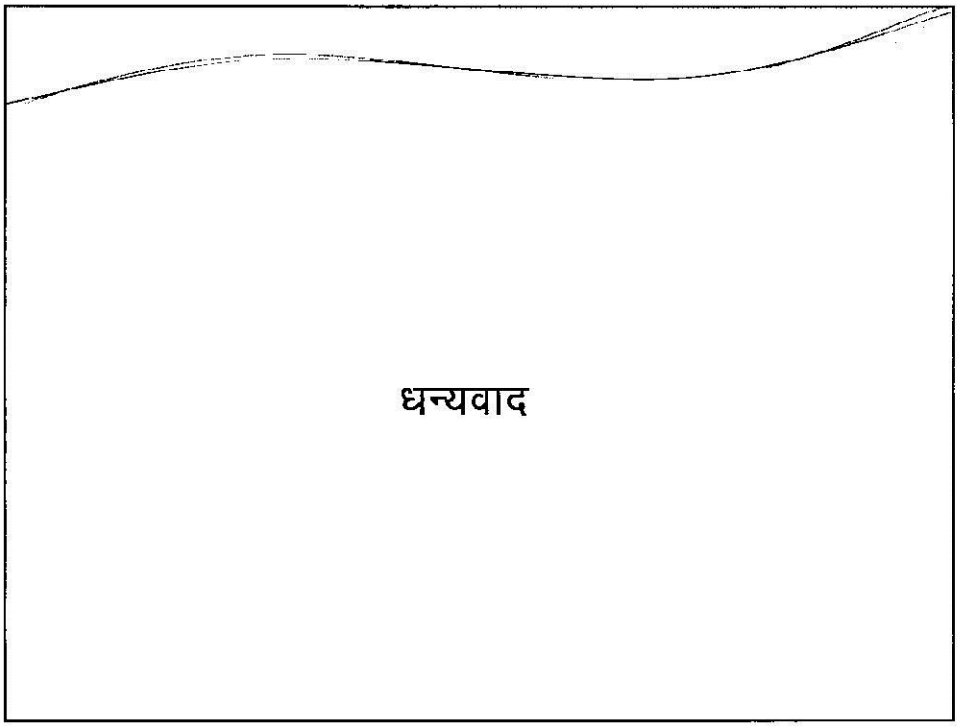
धन्यवाद